भारतीय अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव: जयपुर पड़ाव पर संबोधन

आधुनिक शिक्षा-विज्ञान के भरोसे नहीं बन सकते जगत गुरु: कोठारी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जयपुर. राजस्थान पत्रिका समूह के प्रधान संपादक गुलाब कोठारी ने आधुनिक शिक्षा नीति और विज्ञान पर गंभीर सवाल उठाते हुए कहा है कि इनके भरोसे देश विश्व को नेतृत्व देने वाला नहीं बन सकता है। हम अपनी भाषा में शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं, तो कैसे आत्मनिर्भर बनेंगे। आज विज्ञान एक बीमारी का इलाज कर दूसरी बीमारी को जन्म दे रहा है, लेकिन वेद और आयुर्वेद ने लोगों को स्वस्थ रखा है। स्कूल में ही आयुर्वेद को सिखाया जाए, तो चिकित्सा विभाग की जरूरत ही नहीं रहेगी।

कोठारी ने भारतीय अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव के तहत शनिवार को विज्ञान यात्रा के जयपुर में पड़ाव पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि जिस ज्ञान-विज्ञान के सहारे देश को जगत गुरु कहा जाता था, उसको नए परिवेश में नए वेश में लौटना होगा। क्या कारण रहे कि अथाह ज्ञान सम्पदा होते हुए भी हम विश्व को नेतृत्व नहीं दे पा रहे हैं। इस पर चिंतन करना होगा।

शिक्षा हमें स्वयं से दूर ले जा रही है

उन्होंने कहा कि आज विकास के नाम पर सब उलट गया है। उच्च शिक्षा के नाम पर आत्मा कॉलेज में ही छूट जाती है। तब आत्मनिर्भर कैसे होंगे? आज का शिक्षित तकनीक के भरोसे अकेला जीना चाहता है। मोबाइल पर 5 जी व एआई तकनीक आने वाली है, जिससे इंसान रोबोट बनकर रह जाएगा। शिक्षा से भारत लुप्त है। हर देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा देता है और अपनी संस्कृति पर गर्व करता है, लेकिन हमारी शिक्षा स्वयं से भी दूर ले जाती है। हम संस्कृत को देवभाषा कहते हैं, किन्तु उस पर विश्वास कहां है?

वैशाखियों के सहारे कैसे बनेंगे आत्मनिर्भर

प्रधान संपादक कोठारी ने कहा कि क्या हम वैशाखियों के सहारे आत्मनिर्भर हो सकेंगे? यदि आत्मनिर्भर नहीं हुए तो कैसे विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर पाएंगे? जब आधुनिक विज्ञान पैदा भी नहीं हुआ था, कृष्ण ने गीता में विज्ञान का स्पष्ट उद्घोष किया था। अब भी समय है, हम वैदिक-पौराणिक-औपनिषदिक ज्ञान को शिक्षा नीति का आधार बनाएं। पेट भरने के लिए 20 साल तक शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है। आत्मनिर्भरता का प्रश्न ही खो गया है। सारा वातावरण बेरोजगारी से गूंज रहा है। स्थिति यह आ गई है कि चाहें तो वेद की शरण में चले जाएं और चाहें तो प्रलय की प्रतीक्षा करें।

कोरोना ने पोल खोली

कोरोना महामारी ने छोटी सी अवधि में समझा दिया, आधुनिक विज्ञान ने मानवता को कितना मारा। कोरोना वायरस स्वयं ही विज्ञान की देन है।

8 माह में हमने ताकत दिखाई: विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सचिव प्रो. आशुतोष शर्मा ने कहा कि कोरोनाकाल के 8 माह में हमने दिखा दिया कि हम कैसे आत्मनिर्भर बन सकते है, चुनौतियां हमको रोक नहीं सकती है। आत्मनिर्भरता का संस्कृति से भी नाता है, यह पाठ्यपुस्तक का विषय नहीं है।

ऐसे तो विश्व को भ्रमित ही करेंगे

उन्होंने कहा कि जो ज्ञान हजारों वर्ष पहले ऋषियों ने दिया था, आज का विज्ञान वहां तक भी नहीं पहुंचा है। आज तो विज्ञान भी जीन्स और पुनर्जन्म पर काम कर रहा है। शोध के अभाव में न पीढ़ी को और न ही विश्व को आश्वस्त कर पा रहे हैं। आधुनिक विज्ञान बाह्य जीवन और शरीर की सुविधाओं पर आधारित है, जबकि वेद शरीर को नश्वर कहता है।

सवाल यह है कि जिस ज्ञान पर हमारी सरकारें और शिक्षा नीतियों को विश्वास नहीं है, उस ज्ञान की चर्चा करना तो विश्व को भ्रमित करना ही होगा।